SIKHIZM
.COM

सुखमनी साहिब

(शुद्ध हिन्दी उच्चारण)

WWW.SIKHIZM.COM

गौड़ी सुखमनी म: ५ ॥

सलोक ॥

ੴ सतगुर प्रसाद ॥ आद गुरए नमह ॥ जुगाद गुरए नमह ॥ सतगुरए नमह ॥ श्री गुरदेवए नमह ॥१॥

अष्टपदी ॥ सिमरौ सिमर सिमर सुख पावौ ॥ कल कलेस तन माहि मिटावौ ॥ सिमरौ जास बिसुंभर एकै ॥ नाम जपत अगनत अनेकै ॥ बेद पुरान सिमृत सुधाख्यर ॥ कीने राम नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिस जीअ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥ कांखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन संग मोहि उधारो ॥१॥ सुखमनी सुख अमृत प्रभ नाम ॥ भगत जना कै मन बिस्राम ॥ रहाओ ॥ प्रभ कै सिमरन गर्भ न बसै ॥ प्रभ कै सिमरन दूख जम नसै ॥ प्रभ कै सिमरन काल परहरै ॥ प्रभ कै सिमरन दुसमन टरै ॥ प्रभ सिमरत कछु बिघन न लागै ॥ प्रभ कै सिमरन अनदिन जागै ॥ प्रभ कै सिमरन भौ न

ब्यापै ॥ प्रभ कै सिमरन दुख न संतापै ॥ प्रभ का सिमरन साध कै संग ॥ सरब निधान नानक हर रंग ॥२॥ प्रभ कै सिमरन रिध सिध नौ निध ॥ प्रभ कै सिमरन ज्ञान ध्यान तत बुध ॥ प्रभ कै सिमरन जप तप पूजा ॥ प्रभ कै सिमरन बिनसै दूजा ॥ प्रभ कै सिमरन तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरन दरगह मानी ॥ प्रभ कै सिमरन होए सु भला ॥ प्रभ कै सिमरन सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आप सिमराए ॥ नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥ प्रभ का सिमरन सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरन उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरन त्रिसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरन सभ किछ सुझै ॥ प्रभ कै सिमरन नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरन पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरन मन की मल जाए ॥ अमृत नाम रिद माहि समाए ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासन दसना ॥४॥ प्रभ कौ सिमरहि से धनवंते ॥ प्रभ कौ सिमरहि से पतिवंते ॥ प्रभ कौ सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ कौ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ कौ सिमरहि सु बेमुहताजे ॥ प्रभ कौ सिमरहि सु सरब के राजे ॥ प्रभ कौ सिमरहि से सुखवासी ॥ प्रभ कौ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ सिमरन ते लागे जिन आप दयाला ॥ नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥ प्रभ कौ सिमरहि से परौपकारी ॥ प्रभ कौ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कौ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ प्रभ कौ सिमरहि तिन सूख बिहावै ॥ प्रभ कौ सिमरहि तिन आतम जीता ॥ प्रभ कौ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥

प्रभ कौ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ प्रभ कौ सिमरहि बसहि हर नेरे ॥ संत कृपा ते अनदिन जाग ॥ नानक सिमरन पूरै भाग ॥६॥ प्रभ कै सिमरन कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरन कबहु न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरन हर गुन बानी ॥ प्रभ कै सिमरन सहज समानी ॥ प्रभ कै सिमरन निहचल आसन ॥ प्रभ कै सिमरन कमल बिगासन ॥ प्रभ कै सिमरन अनहद झुनकार ॥ सुख प्रभ सिमरन का अंत न पार ॥ सिमरहि से जन जिन कौ प्रभ मया ॥ नानक तिन जन सरनी पया ॥७॥ हर सिमरन कर भगत प्रगटाए ॥ हर सिमरन लग बेद उपाए ॥ हर सिमरन भए सिध जती दाते ॥ हर सिमरन नीच चहु कुंट जाते ॥ हर सिमरन धारी सभ धरना ॥ सिमर सिमर हर कारन करना ॥ हर सिमरन कीओ सगल अकारा ॥ हर सिमरन महि आप निरंकारा ॥ कर किरपा जिस आप बुझाया ॥ नानक गुरमुख हर सिमरन तिन पाया ॥८॥१॥

सलोक ॥ दीन दरद दुख भंजना घट घट नाथ अनाथ ॥ सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥

अष्टपदी ॥ जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहा नाम तेरै संग सहाई ॥ जह महा भयान दूत जम दलै ॥ तह केवल नाम संग तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अत भारी ॥ हर को नाम खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥ हर को नाम कोट पाप परहरै

॥ गुरमुख नाम जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ सगल सृष्ट को राजा दुखीआ ॥ हर का नाम जपत होए सुखीआ ॥ लाख करोरी बंध न परै ॥ हर का नाम जपत निसतरै ॥ अनिक माया रंग तिख न बुझावै ॥ हर का नाम जपत आघावै ॥ जिह मारग एहो जात इकेला ॥ तह हर नाम संग होत सुहेला ॥ ऐसा नाम मन सदा ध्यायिए ॥ नानक गुरमुख परम गत पाइए ॥२॥ छूटत नही कोट लख बाही ॥ नाम जपत तह पार पराही ॥ अनिक बिघन जह आए संघारै ॥ हर का नाम तत्काल उधारै ॥ अनिक जोन जनमै मर जाम ॥ नाम जपत पावै बिस्राम ॥ हौं मैला मल कबहु न धोवै ॥ हर का नाम कोट पाप खोवै ॥ ऐसा नाम जपहु मन रंग ॥ नानक पाइए साध कै संग ॥३॥ जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ हर का नाम ऊहा संग तोसा ॥ जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ हर का नाम संग उजियारा ॥ जहा पंथ तेरा को न सिञानू ॥ हर का नाम तह नाल पछानू ॥ जह महा भयान तपत बहु घाम ॥ तह हर के नाम की तुम ऊपर छाम ॥ जहा त्रिखा मन तुझ आकरखै ॥ तह नानक हर हर अमृत बरखै ॥४॥ भगत जना की बरतन नाम ॥ संत जना कै मन बिस्राम ॥ हर का नाम दास की ओट ॥ हर कै नाम उधरे जन कोट ॥ हर जस करत संत दिन रात ॥ हर हर अउखध साध कमात ॥ हर जन कै हर नाम निधान ॥ पारब्रह्म जन कीनो दान ॥ मन तन रंग रते रंग एकै ॥ नानक जन कै बिरत बिबेकै ॥५॥ हर का नाम जन कौ मुकत जुगत ॥ हर कै नाम जन

कौ त्रिपत भुगत ॥ हर का नाम जन का रूप रंग ॥ हर नाम जपत कब परै न भंग ॥ हर का नाम जन की वडिआई ॥ हर कै नाम जन सोभा पाए ॥ हर का नाम जन कौ भोग जोग ॥ हर नाम जपत कछु नाहि बियोग ॥ जन राता हर नाम की सेवा ॥ नानक पूजै हर हर देवा ॥६॥ हर हर जन कै माल खजीना ॥ हर धन जन कौ आप प्रभ दीना ॥ हर हर जन कै ओट सताणी ॥ हर प्रताप जन अवर न जाणी ॥ ओत पोत जन हर रस राते ॥ सुन्न समाध नाम रस माते ॥ आठ पहर जन हर हर जपै ॥ हर का भगत प्रगट नही छपै ॥ हर की भगत मुकत बहु करे ॥ नानक जन संग केते तरे ॥७॥ पारजात एहो हर को नाम ॥ कामधेन हर हर गुण गाम ॥ सभ ते ऊतम हर की कथा ॥ नाम सुनत दरद दुख लथा ॥ नाम की महिमा संत रिद वसै ॥ संत प्रताप दुरत सभ नसै ॥ संत का संग वडभागी पाइए ॥ संत की सेवा नाम ध्यायिए ॥ नाम तुल कछु अवर न होए ॥ नानक गुरमुख नाम पावै जन कोए ॥८॥२॥

सलोक ॥ बहु सासत्र बहु सिमृती पेखे सरब ढढोल ॥ पूजस नाही हर हरे नानक नाम अमोल ॥१॥

अष्टपदी ॥ जाप ताप ज्ञान सभ ध्यान ॥ खट सासत्र सिमृत वखयान ॥ जोग अभ्यास करम धर्म किरिया ॥ सगल त्याग बन मधे फिरया

॥ अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥ पुन्न दान होमे बहु रतना ॥ सरीर कटाए होमै कर राती ॥ वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही तुल राम नाम बीचार ॥ नानक गुरमुख नाम जपीऐ इक बार ॥१॥ नौ खंड प्रिथमी फिरै चिर जीवै ॥ महा उदास तपीसर थीवै ॥ अगन माहि होमत परान ॥ कनिक अस्व हैवर भूम दान ॥ निऑली करम करै बहु आसन ॥ जैन मारग संजम अत साधन ॥ निमख निमख कर सरीर कटावै ॥ तौ भी हौमै मैल न जावै ॥ हर के नाम समसर कछु नाहि ॥ नानक गुरमुख नाम जपत गत पाहि ॥२॥ मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमान न मन ते हुटै ॥ सोच करै दिनस अर रात ॥ मन की मैल न तन ते जात ॥ इस देही कौ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिख्या टरै ॥ जल धोवै बहु देह अनीत ॥ सुध कहा होए काची भीत ॥ मन हर के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नाम उधरे पतित बहु मूच ॥३॥ बहुत स्याणप जम का भौ ब्यापै ॥ अनिक जतन कर त्रिसन ना ध्रापै ॥ भेख अनेक अगन नही बुझै ॥ कोट उपाव दरगह नही सिझै ॥ छूटस नाही ऊभ पयाल ॥ मोहि ब्यापहि माया जाल ॥ अवर करतूत सगली जम डानै ॥ गोविंद भजन बिन तिल नही मानै ॥ हर का नाम जपत दुख जाए ॥ नानक बोलै सहज सुभाइ ॥४॥ चार पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की सेवा लागै ॥ जे को आपुना दूख मिटावै ॥ हर हर नाम रिदै सद गावै ॥ जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ साधसंग इह हौमै छोरै ॥ जे को जनम मरण ते

डरै ॥ साध जना की सरनी परै ॥ जिस जन कौ प्रभ दरस प्यासा ॥ नानक ता कै बल बल जासा ॥५॥ सगल पुरख महि पुरख प्रधान ॥ साधसंग जा का मिटै अभिमान ॥ आपस कौ जो जाणै नीचा ॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ जा का मन होए सगल की रीना ॥ हर हर नाम तिन घट घट चीना ॥ मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ पेखै सगल सृष्ट साजना ॥ सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥ नानक पाप पुन्न नही लेपा ॥६॥ निरधन कौ धन तेरो नांओ ॥ निथावे कौ नांओ तेरा थाओ ॥ निमाने कौ प्रभ तेरो मान ॥ सगल घटा कौ देवहु दान ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ अपनी गत मित जानहु आपे ॥ आपन संग आप प्रभ राते ॥ तुम्हरी उसतत तुम ते होए ॥ नानक अवर न जानस कोए ॥७॥ सरब धरम महि सरेस्ट (श्रेष्ट) धरम ॥ हर को नाम जप निरमल करम ॥ सगल किरया महि ऊतम किरया ॥ साधसंग दुरमत मल हिरया ॥ सगल उदम महि उदम भला ॥ हर का नाम जपहु जीअ सदा ॥ सगल बानी महि अमृत बानी ॥ हर को जस सुन रसन बखानी ॥ सगल थान ते ओहो ऊतम थान ॥ नानक जिह घट वसै हर नाम ॥८॥३॥

सलोक ॥ निरगुनीआर एयानया सो प्रभ सदा समाल ॥ जिन कीआ तिस चीत रख नानक निबही नाल ॥१॥

अष्टपदी ॥ रमईआ के गुन चेत परानी ॥ कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥ जिन तूं साज सवार सीगारया ॥ गर्भ अगन महि जिनहि उबारया ॥ बार बिवसथा तुझहि प्यारै दूध ॥ भर जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरध भया ऊपर साक सैन ॥ मुख अपयाओ बैठ कौ दैन ॥ एहो निरगुन गुन कछु ू न बूझै ॥ बखस लेहु तौ नानक सीझै ॥१॥ जिह प्रसाद धर ऊपर सुख बसहि ॥ सुत भ्रात मीत बनिता संग हसहि ॥ जिह प्रसाद पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवन पावक अमुला ॥ जिह प्रसाद भोगहि सभ रसा ॥ सगल समग्री संग साथ बसा ॥ दीने हस्त पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि त्याग अवर संग रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अंध ब्यापे ॥ नानक काढ लेहु प्रभ आपे ॥२॥ आद अंत जो राखनहार ॥ तिस स्यो प्रीत न करै गवार ॥ जा की सेवा नव निध पावै ॥ ता स्यो मूड़ा मन नही लावै ॥ जो ठाकुर सद सदा हजूरे ॥ ता कौ अंधा जानत दूरे ॥ जा की टहल पावै दरगह मान ॥ तिसहि बिसारै मुगध अजान ॥ सदा सदा एहो भूलनहार ॥ नानक राखनहार अपार ॥३॥ रतन त्याग कौडी संग रचै ॥ साच छोड झूठ संग मचै ॥ जो छडना सु असथिर कर मानै ॥ जो होवन सो दूर परानै ॥ छोड जाए तिस का स्रम करै ॥ संग सहाई तिस परहरै ॥ चंदन लेप उतारै धोए ॥ गरधब प्रीत भसम संग होए ॥ अंध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढ लेहु प्रभ दयाल ॥४॥ करतूत पसू की मानस जात ॥ लोक पचारा करै दिन रात ॥ बाहर भेख अंतर

मल माया ॥ छपस नाहि कछु करै छपाया ॥ बाहर ज्ञान ध्यान इसनान ॥ अंतर ब्यापै लोभ सुआन ॥ अंतर अगन बाहर तन सुआह ॥ गल पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अंतर बसै प्रभ आप ॥ नानक ते जन सहज समात ॥५॥ सुन अंधा कैसे मारग पावै ॥ कर गहि लेहु ओड़ निबहावै ॥ कहा बुझारत बूझै डोरा ॥ निस कहीऐ तौ समझै भोरा ॥ कहा बिसनपद गावै गुंग ॥ जतन करै तौ भी सुर भंग ॥ कह पिंगुल परबत पर भवन ॥ नही होत ऊहा उस गवन ॥ करतार करुणा मै दीन बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥ संग सहाई सु आवै न चीत ॥ जो बैराई ता स्यो प्रीत ॥ बलूआ के गृह भीतर बसै ॥ अनद केल माया रंग रसै ॥ द्रिड़ कर मानै मनहि प्रतीत ॥ काल न आवै मूड़े चीत ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ याहू जुगत बिहाने कई जनम ॥ नानक राख लेहु आपन कर करम ॥७॥ तू ठाकुर तुम पहि अरदास ॥ जीओ पिण्ड सभ तेरी रास ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥ कोए न जानै तुमरा अंत ॥ ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥ सगल समग्री तुमरै सूत्र धारी ॥ तुम ते होए सु आज्ञाकारी ॥ तुमरी गत मित तुम ही जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥

सलोक ॥ देनहार प्रभ छोड कै लागहि आन सुआए ॥ नानक कहू न सीझई बिन नावै पत जाए ॥१॥

अष्टपदी ॥ दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक बसत कारन बिखोट गवावै ॥ एक भी न देए दस भी हिर लेए ॥ तौ मूड़ा कहु कहा करेए ॥ जिस ठाकुर स्यो नाही चारा ॥ ता कौ कीजै सद नमसकारा ॥ जा कै मन लागा प्रभ मीठा ॥ सरब सूख ताहू मन वूठा ॥ जिस जन अपना हुकम मनाया ॥ सरब थोक नानक तिन पाया ॥१॥ अगनत साहु अपनी दे रास ॥ खात पीत बरतै अनद उलास ॥ अपुनी अमान कछु बहुर साहु लेए ॥ अज्ञानी मन रोस करेए ॥ अपनी परतीत आप ही खोवै ॥ बहुर उस का बिस्वास न होवै ॥ जिस की बसत तिस आगै राखै ॥ प्रभ की आज्ञा मानै माथै ॥ उस ते चौगुन करै निहाल ॥ नानक साहिब सदा दयाल ॥२॥ अनिक भात माया के हेत ॥ सरपर होवत जान अनेत ॥ बिरख की छाया स्यो रंग लावै ॥ ओह बिनसै ओहो मन पछुतावै ॥ जो दीसै सो चालनहार ॥ लपट रहयो तह अंध अंधार ॥ बटाऊ स्यो जो लावै नेह ॥ ता कौ हाथ न आवै केह ॥ मन हर के नाम की प्रीत सुखदाई ॥ कर किरपा नानक आप लए लाई ॥३॥ मिथ्या तन धन कुटंब सबाया ॥ मिथ्या हौमै ममता माया ॥ मिथ्या राज जोबन धन माल ॥ मिथ्या काम क्रोध बिकराल ॥ मिथ्या रथ हस्ती अस्व बस्त्रा ॥ मिथ्या रंग संग माया पेख हसता ॥ मिथ्या ध्रोह मोह अभिमान ॥ मिथ्या आपस ऊपर करत गुमान ॥ असथिर भगत साध की सरन ॥ नानक जप जप जीवै हर के चरन

॥४॥ मिथ्या स्रवन पर निंदा सुनहि ॥ मिथ्या हस्त पर दरब कौ हिरहि ॥ मिथ्या नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥ मिथ्या रसना भोजन अन स्वाद ॥ मिथ्या चरन पर बिकार कौ धावहि ॥ मिथ्या मन पर लोभ लुभावहि ॥ मिथ्या तन नही परौपकारा ॥ मिथ्या बास लेत बिकारा ॥ बिन बूझे मिथ्या सभ भए ॥ सफल देह नानक हर हर नाम लए ॥५॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तन अंध ॥ मुख आवत ता कै दुरगंध ॥ बिन सिमरन दिन रैन ब्रिथा बिहाए ॥ मेघ बिना ज्यों खेती जाए ॥ गोबिद भजन बिन ब्रिथे सभ काम ॥ ज्यों किरपन के निरारथ दाम ॥ धंन धंन ते जन जिह घट बसिओ हर नांओ ॥ नानक ता कै बल बल जाउ ॥६॥ रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मन नही प्रीत मुखहु गंढ लावत ॥ जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहर भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आप न करै ॥ आवत जावत जनमै मरै ॥ जिस कै अंतर बसै निरंकार ॥ तिस की सीख तरै संसार ॥ जो तुम भाने तिन प्रभ जाता ॥ नानक उन जन चरन पराता ॥७॥ करौ बेनती पारब्रह्म सभ जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि आप आप करत निबेरा ॥ किसै दूर जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ उपाव सयानप सगल ते रहत ॥ सभ कछु जानै आतम की रहत ॥ जिस भावै तिस लए लड़ लाए ॥ थान थनंतर रहया समाए ॥ सो सेवक जिस किरपा करी ॥ निमख निमख जप नानक हरी ॥८॥५॥

सलोक ॥ काम क्रोध अर लोभ मोह बिनस जाए अहमेव ॥
नानक प्रभ सरणागती कर प्रसाद गुरदेव ॥१॥

अष्टपदी ॥ जिह प्रसाद छतीह अमृत खाहि ॥ तिस ठाकुर कौ रख मन माहि ॥ जिह प्रसाद सुगंधत तन लावहि ॥ तिस कौ सिमरत परम गत पावहि ॥ जिह प्रसाद बसहि सुख मंदर ॥ तिसहि ध्याए सदा मन अंदर ॥ जिह प्रसाद गृह संग सुख बसना ॥ आठ पहर सिमरहु तिस रसना ॥ जिह प्रसाद रंग रस भोग ॥ नानक सदा ध्यायिए ध्यावन जोग ॥१॥ जिह प्रसाद पाट पटंबर हंढावहि ॥ तिसहि त्याग कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसाद सुख सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर ता का जस गावीजै ॥ जिह प्रसाद तुझ सभ कोऊ मानै ॥ मुख ता को जस रसन बखानै ॥ जिह प्रसाद तेरो रहता धरम ॥ मन सदा ध्याए केवल पारब्रह्म ॥ प्रभ जी जपत दरगह मान पावहि ॥ नानक पत सेती घर जावहि ॥२॥ जिह प्रसाद आरोग कंचन देही ॥ लिव लावहु तिस राम सनेही ॥ जिह प्रसाद तेरा ओला रहत ॥ मन सुख पावहि हर हर जस कहत ॥ जिह प्रसाद तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ मन सरनी पर ठाकुर प्रभ ता कै ॥ जिह प्रसाद तुझ को न पहूचै ॥ मन सास सास सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ जिह प्रसाद पाए दुर्लभ देह ॥ नानक ता की भगत करेह ॥३॥ जिह प्रसाद आभूखन पहिरीजै

॥ मन तिस सिमरत क्यों आलस कीजै ॥ जिह प्रसाद अस्व हस्त असवारी ॥ मन तिस प्रभ कौ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसाद बाग मिलख धना ॥ राख परोए प्रभ अपुने मना ॥ जिन तेरी मन बनत बनाई ॥ ऊठत बैठत सद तिसहि ध्याई ॥ तिसहि ध्याए जो एक अलखै ॥ ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥ जिह प्रसाद करहि पुन्न बहु दान ॥ मन आठ पहर कर तिस का ध्यान ॥ जिह प्रसाद तू आचार ब्योहारी ॥ तिस प्रभ कौ सास सास चितारी ॥ जिह प्रसाद तेरा सुंदर रूप ॥ सो प्रभ सिमरहु सदा अनूप ॥ जिह प्रसाद तेरी नीकी जात ॥ सो प्रभ सिमर सदा दिन रात ॥ जिह प्रसाद तेरी पत रहै ॥ गुर प्रसाद नानक जस कहै ॥५॥ जिह प्रसाद सुनहि करन नाद ॥ जिह प्रसाद पेखहि बिसमाद ॥ जिह प्रसाद बोलहि अमृत रसना ॥ जिह प्रसाद सुख सहजे बसना ॥ जिह प्रसाद हस्त कर चलहि ॥ जिह प्रसाद सम्पूरन फलहि ॥ जिह प्रसाद परम गत पावहि ॥ जिह प्रसाद सुख सहज समावहि ॥ ऐसा प्रभ त्याग अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसाद नानक मन जागहु ॥६॥ जिह प्रसाद तूं प्रगट संसार ॥ तिस प्रभ कौ मूल न मनहु बिसार ॥ जिह प्रसाद तेरा परताप ॥ रे मन मूड़ तू ता कौ जाप ॥ जिह प्रसाद तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जान मन सदा हजूरे ॥ जिह प्रसाद तूं पावहि साच ॥ रे मन मेरे तूं ता स्यो राच ॥ जिह प्रसाद सभ की गत होए ॥ नानक जाप जपै जप सोए ॥७॥ आप जपाए जपै सो नांओ ॥ आप गावाए सु हर गुन गाओ ॥ प्रभ

किरपा ते होए प्रगास ॥ प्रभू दया ते कमल बिगास ॥ प्रभ सुप्रसन्न बसै मन सोए ॥ प्रभ दया ते मत ऊतम होए ॥ सरब निधान प्रभ तेरी मया ॥ आपहु कछु न किनहू लया ॥ जित जित लावहु तित लगहि हर नाथ ॥ नानक इन कै कछु न हाथ ॥८॥६॥

सलोक ॥ अगम अगाध पारब्रह्म सोए ॥ जो जो कहै सु मुकता होए ॥ सुन मीता नानक बिनवंता ॥ साध जना की अचरज कथा ॥१॥

अष्टपदी ॥ साध कै संग मुख ऊजल होत ॥ साधसंग मल सगली खोत ॥ साध कै संग मिटै अभिमान ॥ साध कै संग प्रगटै सुज्ञान ॥ साध कै संग बुझै प्रभ नेरा ॥ साधसंग सभ होत निबेरा ॥ साध कै संग पाए नाम रतन ॥ साध कै संग एक ऊपर जतन ॥ साध की महिमा बरनै कौन प्रानी ॥ नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥ साध कै संग अगोचर मिलै ॥ साध कै संग सदा परफुलै ॥ साध कै संग आवहि बस पंचा ॥ साधसंग अमृत रस भुंचा ॥ साधसंग होए सभ की रेन ॥ साध कै संग मनोहर बैन ॥ साध कै संग न कतहूं धावै ॥ साधसंग असथित मन पावै ॥ साध कै संग माया ते भिन्न ॥ साधसंग नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥ साधसंग दुसमन सभ मीत ॥ साधू कै संग महा पुनीत ॥ साधसंग किस स्यो नही बैर ॥

साध कै संग न बीगा पैर ॥ साध कै संग नाही को मंदा ॥ साधसंग जाने परमानंदा ॥ साध कै संग नाही हौं ताप ॥ साध कै संग तजै सभ आप ॥ आपे जानै साध बडाई ॥ नानक साध प्रभू बन आई ॥३॥ साध कै संग न कबहू धावै ॥ साध कै संग सदा सुख पावै ॥ साधसंग बसत अगोचर लहै ॥ साधू कै संग अजर सहै ॥ साध कै संग बसै थान ऊचै ॥ साधू कै संग महल पहूचै ॥ साध कै संग द्रिड़ै सभ धरम ॥ साध कै संग केवल पारब्रह्म ॥ साध कै संग पाए नाम निधान ॥ नानक साधू कै कुरबान ॥४॥ साध कै संग सभ कुल उधारै ॥ साधसंग साजन मीत कुटंब निसतारै ॥ साधू कै संग सो धन पावै ॥ जिस धन ते सभ को वरसावै ॥ साधसंग धरम राय करे सेवा ॥ साध कै संग सोभा सुरदेवा ॥ साधू कै संग पाप पलाइन ॥ साधसंग अमृत गुन गाइन ॥ साध कै संग सरब थान गम ॥ नानक साध कै संग सफल जनम ॥५॥ साध कै संग नही कछु घाल ॥ दरसन भेटत होत निहाल ॥ साध कै संग कलूखत हरै ॥ साध कै संग नरक परहरै ॥ साध कै संग ईहा ऊहा सुहेला ॥ साधसंग बिछुरत हर मेला ॥ जो इछै सोई फल पावै ॥ साध कै संग न बिरथा जावै ॥ पारब्रह्म साध रिद बसै ॥ नानक उधरै साध सुन रसै ॥६॥ साध कै संग सुनउ हर नांओ ॥ साधसंग हर के गुन गाओ ॥ साध कै संग न मन ते बिसरै ॥ साधसंग सरपर निसतरै ॥ साध कै संग लगै प्रभ मीठा ॥ साधू कै संग घट घट डीठा ॥ साधसंग भए आज्ञाकारी ॥ साधसंग गत भई

हमारी ॥ साध कै संग मिटे सभ रोग ॥ नानक साध भेटे संजोग ॥७॥ साध की महिमा बेद न जानहि ॥ जेता सुनहि तेता बखयानहि ॥ साध की उपमा तिहु गुण ते दूर ॥ साध की उपमा रही भरपूर ॥ साध की सोभा का नाही अंत ॥ साध की सोभा सदा बेअंत ॥ साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥ साध की सोभा मूच ते मूची ॥ साध की सोभा साध बन आई ॥ नानक साध प्रभ भेद न भाई ॥८॥७॥

सलोक ॥ मन साचा मुख साचा सोए ॥ अवर न पेखै एकस बिन कोए ॥ नानक इह लछण ब्रह्म ज्ञानी होए ॥१॥

अष्टपदी ॥ ब्रह्म ज्ञानी सदा निरलेप ॥ जैसे जल महि कमल अलेप ॥ ब्रह्म ज्ञानी सदा निरदोख ॥ जैसे सूर सरब कौ सोख ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै द्रिसट समान ॥ जैसे राज रंक कौ लागै तुल पवान ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै धीरज एक ॥ ज्यों बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ ब्रह्म ज्ञानी का इहै गुनाउ ॥ नानक ज्यों पावक का सहज सुभाउ ॥१॥ ब्रह्म ज्ञानी निरमल ते निरमला ॥ जैसे मैल न लागै जला ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै मन होए प्रगास ॥ जैसे धर ऊपर आकास ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै मित्र सत्र समान ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै नाही अभिमान ॥ ब्रह्म ज्ञानी ऊच ते ऊचा ॥ मन अपनै है सभ ते नीचा ॥ ब्रह्म ज्ञानी से जन भए ॥ नानक जिन प्रभ आप करेए ॥२॥ ब्रह्म ज्ञानी सगल की रीना ॥

आतम रस ब्रह्म ज्ञानी चीना ॥ ब्रह्म ज्ञानी की सभ ऊपर मया ॥ ब्रह्म ज्ञानी ते कछु बुरा न भया ॥ ब्रह्म ज्ञानी सदा समदरसी ॥ ब्रह्म ज्ञानी की द्रिसट अमृत बरसी ॥ ब्रह्म ज्ञानी बंधन ते मुकता ॥ ब्रह्म ज्ञानी की निरमल जुगता ॥ ब्रह्म ज्ञानी का भोजन ज्ञान ॥ नानक ब्रह्म ज्ञानी का ब्रह्म ध्यान ॥३॥ ब्रह्म ज्ञानी एक ऊपर आस ॥ ब्रह्म ज्ञानी का नही बिनास ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रह्म ज्ञानी परौपकार उमाहा ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै नाही धंधा ॥ ब्रह्म ज्ञानी ले धावत बंधा ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै होए सु भला ॥ ब्रह्म ज्ञानी सुफल फला ॥ ब्रह्म ज्ञानी संग सगल उधार ॥ नानक ब्रह्म ज्ञानी जपै सगल संसार ॥४॥ ब्रह्म ज्ञानी कै एकै रंग ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै बसै प्रभ संग ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै नाम आधार ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै नाम परवार ॥ ब्रह्म ज्ञानी सदा सद जागत ॥ ब्रह्म ज्ञानी अह्मबुध त्यागत ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै मन परमानंद ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै घर सदा अनंद ॥ ब्रह्म ज्ञानी सुख सहज निवास ॥ नानक ब्रह्म ज्ञानी का नही बिनास ॥५॥ ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म का बेता ॥ ब्रह्म ज्ञानी एक संग हेता ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै होए अचिंत ॥ ब्रह्म ज्ञानी का निरमल मंत ॥ ब्रह्म ज्ञानी जिस करै प्रभ आप ॥ ब्रह्म ज्ञानी का बड परताप ॥ ब्रह्म ज्ञानी का दरस बडभागी पाइए ॥ ब्रह्म ज्ञानी कौ बल बल जाईऐ ॥ ब्रह्म ज्ञानी कौ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रह्म ज्ञानी आप परमेसुर ॥६॥ ब्रह्म ज्ञानी की कीमत नाहि ॥ ब्रह्म ज्ञानी कै सगल मन माहि ॥ ब्रह्म ज्ञानी का कौन जानै भेद ॥ ब्रह्म ज्ञानी कौ

सदा अदेस ॥ ब्रह्म ज्ञानी का कथिया न जाए अधाख्यर ॥ ब्रह्म ज्ञानी सरब का ठाकुर ॥ ब्रह्म ज्ञानी की मित कौन बखानै ॥ ब्रह्म ज्ञानी की गत ब्रह्म ज्ञानी जानै ॥ ब्रह्म ज्ञानी का अंत न पार ॥ नानक ब्रह्म ज्ञानी कौ सदा नमसकार ॥७॥ ब्रह्म ज्ञानी सभ सृष्ट का करता ॥ ब्रह्म ज्ञानी सद जीवै नही मरता ॥ ब्रह्म ज्ञानी मुकत जुगत जीअ का दाता ॥ ब्रह्म ज्ञानी पूरन पुरख बिधाता ॥ ब्रह्म ज्ञानी अनाथ का नाथ॥ ब्रह्म ज्ञानी का सभ ऊपर हाथ ॥ ब्रह्म ज्ञानी का सगल अकार ॥ ब्रह्म ज्ञानी आप निरंकार ॥ ब्रह्म ज्ञानी की सोभा ब्रह्म ज्ञानी बनी ॥ नानक ब्रह्म ज्ञानी सरब का धनी ॥८॥८॥

सलोक ॥ उर धारै जो अंतर नाम ॥ सरब मै पेखै भगवान ॥ निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक ओहो अपरस सगल निसतारै ॥१॥

अष्टपदी ॥ मिथ्या नाही रसना परस ॥ मन महि प्रीत निरंजन दरस ॥ पर त्रिअ रूप न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल संतसंग हेत ॥ करन न सुनै काहू की निंदा ॥ सभ ते जानै आपस कौ मंदा ॥ गुर प्रसाद बिख्या परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरै ॥ इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ नानक कोट मधे को ऐसा अपरस ॥१॥ बैसनो सो जिस ऊपर सुप्रसंन ॥ बिसन की माया ते होए भिन्न ॥ करम करत होवै निहकरम

॥ तिस बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की इछा नही बाछै ॥ केवल भगत कीरतन संग राचै ॥ मन तन अंतर सिमरन गोपाल ॥ सभ ऊपर होवत किरपाल ॥ आप द्रिड़ै अवरह नाम जपावै ॥ नानक ओहो बैसनो परम गत पावै ॥२॥ भगौती भगवंत भगत का रंग ॥ सगल त्यागै दुष्ट का संग ॥ मन ते बिनसै सगला भरम ॥ कर पूजै सगल पारब्रह्म ॥ साधसंग पापा मल खोवै ॥ तिस भगौती की मत ऊतम होवै ॥ भगवंत की टहल करै नित नीत ॥ मन तन अरपै बिसन परीत ॥ हर के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक ऐसा भगौती भगवंत कौ पावै ॥३॥ सो पंडित जो मन परबोधै ॥ राम नाम आतम महि सोधै ॥ राम नाम सार रस पीवै ॥ उस पंडित कै उपदेस जग जीवै ॥ हर की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पंडित फिर जोन न आवै ॥ बेद पुरान सिमृत बूझै मूल ॥ सूखम महि जानै असथूल ॥ चहु वरना कौ दे उपदेस ॥ नानक उस पंडित कौ सदा अदेस ॥४॥ बीज मंत्र सरब को ज्ञान ॥ चहु वरना महि जपै कोऊ नाम ॥ जो जो जपै तिस की गत होए ॥ साधसंग पावै जन कोए ॥ कर किरपा अंतर उर धारै ॥ पस प्रेत मुघद पाथर कौ तारै ॥ सरब रोग का औखध नाम ॥ कल्याण रूप मंगल गुण गाम ॥ काहू जुगत कितै न पाइए धरम ॥ नानक तिस मिलै जिस लिख्या धुर करम ॥५॥ जिस कै मन पारब्रह्म का निवास ॥ तिस का नाम सत रामदास ॥ आतम राम तिस नदरी आया ॥ दास दसंतण भाए तिन पाया ॥ सदा निकट निकट हर जान ॥ सो

दास दरगह परवान ॥ अपुने दास कौ आप किरपा करै ॥ तिस दास कौ सभ सोझी परै ॥ सगल संग आतम उदास ॥ ऐसी जुगत नानक रामदास ॥६॥ प्रभ की आज्ञा आतम हितावै ॥ जीवन मुकत सोऊ कहावै ॥ तैसा हरख तैसा उस सोग ॥ सदा अनंद तह नही बियोग ॥ तैसा सुवरन तैसी उस माटी ॥ तैसा अमृत तैसी बिख खाटी ॥ तैसा मान तैसा अभिमान ॥ तैसा रंक तैसा राजान ॥ जो वरताए साई जुगत ॥ नानक ओहो पुरख कहीऐ जीवन मुकत ॥७॥ पारब्रह्म के सगले ठाओ ॥ जित जित घर राखै तैसा तिन नांओ ॥ आपे करन करावन जोग ॥ प्रभ भावै सोई फुन होग ॥ पसरियो आप होए अनत तरंग ॥ लखे न जाहि पारब्रह्म के रंग ॥ जैसी मत देए तैसा परगास ॥ पारब्रह्म करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दयाल ॥ सिमर सिमर नानक भए निहाल ॥८॥९॥

सलोक ॥ उसतत करहि अनेक जन अंत न पारावार ॥ नानक रचना प्रभ रची बहु बिध अनिक प्रकार ॥१॥

अष्टपदी ॥ कई कोट होए पूजारी ॥ कई कोट आचार ब्योहारी ॥ कई कोट भए तीरथ वासी ॥ कई कोट बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोट बेद के स्रोते ॥ कई कोट तपीसुर होते ॥ कई कोट आतम ध्यान धारहि ॥ कई कोट कबि काबि बीचारहि ॥ कई कोट नवतन नाम

ध्यावह ॥ नानक करते का अंत न पावहि ॥१॥ कई कोट भए अभिमानी ॥ कई कोट अंध अज्ञानी ॥ कई कोट किरपन कठोर ॥ कई कोट अभिग आतम निकोर ॥ कई कोट पर दरब कौ हिरहि ॥ कई कोट पर दूखना करहि ॥ कई कोट माया स्रम माहि ॥ कई कोट परदेस भ्रमाहि ॥ जित जित लावहु तित तित लगना ॥ नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥ कई कोट सिध जती जोगी ॥ कई कोट राजे रस भोगी ॥ कई कोट पंखी सरप उपाए ॥ कई कोट पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोट पवण पाणी बैसंतर ॥ कई कोट देस भू मंडल ॥ कई कोट ससीअर सूर नख्यत्र ॥ कई कोट देव दानव इंद्र सिर छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूत धारै ॥ नानक जिस जिस भावै तिस तिस निसतारै ॥३॥ कई कोट राजस तामस सातक ॥ कई कोट बेद पुरान सिमृत अर सासत ॥ कई कोट कीए रतन समुंद ॥ कई कोट नाना प्रकार जंत ॥ कई कोट कीए चिर जीवे ॥ कई कोट गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ कई कोट जख्य किंनर पिसाच ॥ कई कोट भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥ सभ ते नेरै सभहू ते दूर ॥ नानक आप अलिपत रहया भरपूर ॥४॥ कई कोट पाताल के वासी ॥ कई कोट नरक सुरग निवासी ॥ कई कोट जनमहि जीवहि मरहि ॥ कई कोट बहु जोनी फिरहि ॥ कई कोट बैठत ही खाहि ॥ कई कोट घालहि थकि पाहि ॥ कई कोट कीए धनवंत ॥ कई कोट माया महि चिंत ॥ जह जह भाणा तह तह राखे ॥ नानक सभ किछ प्रभ कै हाथे ॥५॥ कई कोट

भए बैरागी ॥ राम नाम संग तिन लिव लागी ॥ कई कोट प्रभ कौ खोजंते ॥ आतम महि पारब्रह्म लहंते ॥ कई कोट दरसन प्रभ पिआस ॥ तिन कौ मिलिओ प्रभ अबिनास ॥ कई कोट मागहि सतसंग ॥ पारब्रह्म तिन लागा रंग ॥ जिन कौ होए आप सुप्रसंन ॥ नानक ते जन सदा धन धंन ॥६॥ कई कोट खाणी अर खंड ॥ कई कोट अकास ब्रह्मंड ॥ कई कोट होए अवतार ॥ कई जुगत कीनो बिसथार ॥ कई बार पसरिओ पासार ॥ सदा सदा इक एकंकार ॥ कई कोट कीने बहु भात ॥ प्रभ ते होए प्रभ माहि समात ॥ ता का अंत न जानै कोए ॥ आपे आप नानक प्रभ सोए ॥७॥ कई कोट पारब्रह्म के दास ॥ तिन होवत आतम परगास ॥ कई कोट तत के बेते ॥ सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोट नाम रस पीवहि ॥ अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ कई कोट नाम गुन गावहि ॥ आतम रस सुख सहज समावहि ॥ अपुने जन कौ सास सास समारे ॥ नानक ओइ परमेसुर के प्यारे ॥८॥१०॥

सलोक ॥ करण कारण प्रभ एक है दूसर नाही कोए ॥ नानक तिस बलिहारणै जल थल महीअल सोए ॥१॥

अष्टपदी ॥ करन करावन करनै जोग ॥ जो तिस भावै सोई होग ॥ खिन महि थाप उथापनहारा ॥ अंत नही किछ पारावारा ॥ हुकमे

धार अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकम समावै ॥ हुकमे ऊच नीच ब्योहार ॥ हुकमे अनिक रंग परकार ॥ कर कर देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभ महि रहया समाई ॥१॥ प्रभ भावै मानुख गत पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ भावै बिन सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हर गुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आप करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरया का आप सुआमी ॥ खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ जो भावै सो कार करावै ॥ नानक दृष्टि अवर न आवै ॥२॥ कहु मानुख ते क्या होए आवै ॥ जो तिस भावै सोई करावै ॥ इस कै हाथ होए ता सभ किछ लेए ॥ जो तिस भावै सोई करेए ॥ अनजानत बिख्या महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥ भरमे भूला दह दिस धावै ॥ निमख माहि चार कुंट फिर आवै ॥ कर किरपा जिस अपनी भगत देए ॥ नानक ते जन नाम मिलेइ ॥३॥ खिन महि नीच कीट कौ राज ॥ पारब्रह्म गरीब निवाज ॥ जा का द्रिसट कछु न आवै ॥ तिस तत्काल दह दिस प्रगटावै ॥ जा कौ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ जीओ पिण्ड सभ तिस की रास ॥ घट घट पूरन ब्रह्म प्रगास ॥ अपनी बणत आप बनाई ॥ नानक जीवै देख बडाई ॥४॥ इस का बल नाही इस हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥ आज्ञाकारी बपुरा जीओ ॥ जो तिस भावै सोई फुन थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग हरख रंग हसै ॥ कबहू निंद चिंद ब्योहार ॥ कबहू ऊभ अकास पयाल ॥ कबहू बेता ब्रह्म

बीचार ॥ नानक आप मिलावणहार ॥५॥ कबहू निरत करै बहु भात ॥ कबहू सोए रहै दिन रात ॥ कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूं सरब की होत रवाल ॥ कबहू होए बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का साजा ॥ कबहू अपकीरत महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ ज्यों प्रभ राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसाद नानक सच कहै ॥६॥ कबहू होए पंडित करे बख्यान ॥ कबहू मोनिधारी लावै ध्यान ॥ कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुख ज्ञान ॥ कबहू कीट हस्त पतंग होए जीआ ॥ अनिक जोन भरमै भरमीआ ॥ नाना रूप ज्यों स्वागी दिखावै ॥ ज्यों प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ जो तिस भावै सोई होए ॥ नानक दूजा अवर न कोए ॥७॥ कबहू साधसंगत एहो पावै ॥ उस असथान ते बहुर न आवै ॥ अंतर होए ज्ञान परगास ॥ उस असथान का नही बिनास ॥ मन तन नाम रते इक रंग ॥ सदा बसहि पारब्रह्म कै संग ॥ ज्यों जल महि जल आए खटाना ॥ त्यों जोती संग जोत समाना ॥ मिट गए गवन पाए बिस्राम ॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥

सलोक ॥ सुखी बसै मसकीनीआ आप निवार तले ॥ बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥

अष्टपदी ॥ जिस कै अंतर राज अभिमान ॥ सो नरकपाती होवत सुआन ॥ जो जानै मै जोबनवंत ॥ सो होवत बिसटा का जंत ॥ आपस कौ करमवंत कहावै ॥ जनम मरै बहु जोन भ्रमावै ॥ धन भूम का जो करै गुमान ॥ सो मूरख अंधा अज्ञान ॥ कर किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ नानक ईहा मुकत आगै सुख पावै ॥१॥ धनवंता होए कर गरबावै ॥ त्रिण समान कछु संग न जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपर करे आस ॥ पल भीतर ता का होए बिनास ॥ सभ ते आप जानै बलवंत ॥ खिन महि होए जाए भसमंत ॥ किसै न बदै आप अहंकारी ॥ धरम राय तिस करे खुआरी ॥ गुर प्रसाद जा का मिटै अभिमान ॥ सो जन नानक दरगह परवान ॥२॥ कोट करम करै हौं धारे ॥ स्रम पावै सगले बिरथारे ॥ अनिक तपस्या करे अहंकार ॥ नरक सुरग फिर फिर अवतार ॥ अनिक जतन कर आतम नही द्रवै ॥ हर दरगह कहु कैसे गवै ॥ आपस कौ जो भला कहावै ॥ तिसहि भलाई निकट न आवै ॥ सरब की रेन जा का मन होए ॥ कहु नानक ता की निरमल सोए ॥३॥ जब लग जानै मुझ ते कछु होए ॥ तब इस कौ सुख नाही कोए ॥ जब इह जानै मै किछ करता ॥ तब लग गर्भ जोन महि फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीत ॥ तब लग निहचल नाही चीत ॥ जब लग मोह मगन संग माए ॥ तब लग धरम राय देए सजाए ॥ प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥ गुर प्रसाद नानक हौं छूटै ॥४॥ सहस खटे लख कौ उठ धावै ॥ त्रिपत न आवै माया

पाछै पावै ॥ अनिक भोग बिख्या के करै ॥ नह त्रिपतावै खप खप मरै ॥ बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥ नाम रंग सरब सुख होए ॥ बडभागी किसै परापत होए ॥ करन करावन आपे आप ॥ सदा सदा नानक हर जाप ॥५॥ करन करावन करनैहार ॥ इस कै हाथ कहा बीचार ॥ जैसी द्रिसट करे तैसा होए ॥ आपे आप आप प्रभ सोए ॥ जो किछ कीनो सु अपनै रंग ॥ सभ ते दूर सभहू कै संग ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥ आपहि एक आपहि अनेक ॥ मरै न बिनसै आवै न जाए ॥ नानक सद ही रहया समाए ॥६॥ आप उपदेसै समझै आप ॥ आपे रचिआ सभ कै साथ ॥ आप कीनो आपन बिसथार ॥ सभ कछु उस का ओहो करनैहार ॥ उस ते भिन्न कहहु किछ होए ॥ थान थनंतर एकै सोए ॥ अपुने चलित आप करणैहार ॥ कौतक करै रंग आपार ॥ मन महि आप मन अपुने माहि ॥ नानक कीमत कहन न जाए ॥७॥ सत सत सत प्रभ सुआमी ॥ गुर परसाद किनै वखयानी ॥ सच सच सच सभ कीना ॥ कोट मधे किनै बिरलै चीना ॥ भला भला भला तेरा रूप ॥ अत सुंदर अपार अनूप ॥ निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥ घट घट सुनी स्रवन बख्याणी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नाम जपै नानक मन प्रीत ॥८॥१२॥

सलोक ॥ संत सरन जो जन परै सो जन उधरनहार ॥ संत की निंदा नानका बहुर बहुर अवतार ॥१॥

अष्टपदी ॥ संत कै दूखन आरजा घटै ॥ संत कै दूखन जम ते नही छुटै ॥ संत कै दूखन सुख सभ जाए ॥ संत कै दूखन नरक महि पाए ॥ संत कै दूखन मत होए मलीन ॥ संत कै दूखन सोभा ते हीन ॥ संत के हते कौ रखै न कोए ॥ संत कै दूखन थान भ्रष्ट होए ॥ संत कृपाल कृपा जे करै ॥ नानक संतसंग निंदक भी तरै ॥१॥ संत के दूखन ते मुख भवै ॥ संतन कै दूखन काग ज्यों लवै ॥ संतन कै दूखन सरप जोन पाए ॥ संत कै दूखन त्रिगद जोन किरमाए ॥ संतन कै दूखन त्रिसना महि जलै ॥ संत कै दूखन सभ को छलै ॥ संत कै दूखन तेज सभ जाए ॥ संत कै दूखन नीच नीचाइ ॥ संत दोखी का थाओ को नाहि ॥ नानक संत भावै ता ओइ भी गत पाहि ॥२॥ संत का निंदक महा अतताई ॥ संत का निंदक खिन टिकन न पाए ॥ संत का निंदक महा हतिआरा ॥ संत का निंदक परमेसुर मारा ॥ संत का निंदक राज ते हीन ॥ संत का निंदक दुखीआ अर दीन ॥ संत के निंदक कौ सरब रोग ॥ संत के निंदक कौ सदा बिजोग ॥ संत की निंदा दोख महि दोख ॥ नानक संत भावै ता उस का भी होए मोख ॥३॥ संत का दोखी सदा अपवित ॥ संत का दोखी किसै का नही मित ॥ संत के दोखी कौ डान लागै ॥ संत के दोखी कौ सभ त्यागै

॥ संत का दोखी महा अहंकारी ॥ संत का दोखी सदा बिकारी ॥ संत का दोखी जनमै मरै ॥ संत की दूखना सुख ते टरै ॥ संत के दोखी कौ नाही ठाओ ॥ नानक संत भावै ता लए मिलाए ॥४॥ संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ संत का दोखी कितै काज न पहूचै ॥ संत के दोखी कौ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ संत का दोखी उझड़ पाइए ॥ संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥ ज्यों सास बिना मिरतक की लोथा ॥ संत के दोखी की जड़ किछ नाहि ॥ आपन बीज आपे ही खाहि ॥ संत के दोखी कौ अवर न राखनहार ॥ नानक संत भावै ता लए उबार ॥५॥ संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ ज्यों जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ ज्यों पावक ईधन नही ध्रापै ॥ संत का दोखी छुटै इकेला ॥ ज्यों बूआड़ु तिल खेत माहि दुहेला ॥ संत का दोखी धरम ते रहत ॥ संत का दोखी सद मिथ्या कहत ॥ किरत निंदक का धुर ही पया ॥ नानक जो तिस भावै सोई थिआ ॥६॥ संत का दोखी बिगड़ रूप होए जाए ॥ संत के दोखी कौ दरगह मिलै सजाए ॥ संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥ संत के दोखी की पुजै न आसा ॥ संत का दोखी उठचलै निरासा ॥ संत कै दोख न त्रिसटै कोए ॥ जैसा भावै तैसा कोई होए ॥ पया किरत न मेटै कोए ॥ नानक जानै सचा सोए ॥७॥ सभ घट तिस के ओहो करनैहार ॥ सदा सदा तिस कौ नमसकार ॥ प्रभ की उसतत करहु दिन रात ॥ तिसहि धिआवहु

सास गिरास ॥ सभ कछु वरतै तिस का कीआ ॥ जैसा करे तैसा को थीआ ॥ अपना खेल आप करनैहार ॥ दूसर कौन कहै बीचार ॥ जिस नो कृपा करै तिस आपन नाम देए ॥ बडभागी नानक जन सेए ॥८॥१३॥

सलोक ॥ तजहु स्यानप सुर जनहु सिमरहु हर हर राय ॥ एक आस हर मन रखहु नानक दूख भरम भौ जाए ॥१॥

अष्टपदी ॥ मानुख की टैक ब्रिथी सभ जान ॥ देवन कौ एकै भगवान ॥ जिस कै दीऐ रहै अघाए ॥ बहुर न त्रिसना लागै आए ॥ मारै राखै एको आप ॥ मानुख कै किछ नाही हाथ ॥ तिस का हुकम बूझि सुख होए ॥ तिस का नाम रख कंठपरोए ॥ सिमर सिमर सिमर प्रभ सोए ॥ नानक बिघन न लागै कोए ॥१॥ उसतत मन महि कर निरंकार ॥ कर मन मेरे सत ब्योहार ॥ निरमल रसना अमृत पीओ ॥ सदा सुहेला कर लेहि जीओ ॥ नैनहु पेख ठाकुर का रंग ॥ साधसंग बिनसै सभ संग ॥ चरन चलौ मारग गोबिंद ॥ मिटहि पाप जपीऐ हर बिंद ॥ कर हर करम स्रवन हर कथा ॥ हर दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हर के गुन गाहि ॥ राम नाम जो करहि बीचार ॥ से धनवंत गनी संसार ॥ मन तन मुख बोलहि हर मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ एको एक एक पछानै

॥ इत उत की ओहो सोझी जानै ॥ नाम संग जिस का मन मानया ॥ नानक तिनहि निरंजन जानया ॥३॥ गुर प्रसाद आपन आप सुझै ॥ तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥ साधसंग हर हर जस कहत ॥ सरब रोग ते ओहो हर जन रहत ॥ अनदिन कीरतन केवल बख्यान ॥ गृहसत महि सोई निरबान ॥ एक ऊपर जिस जन की आसा ॥ तिस की कटीऐ जम की फासा ॥ पारब्रह्म की जिस मन भूख ॥ नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥ जिस कौ हर प्रभ मन चित आवै ॥ सो संत सुहेला नही डुलावै ॥ जिस प्रभ अपुना किरपा करै ॥ सो सेवक कहु किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाया ॥ अपुने कारज महि आप समाया ॥ सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ गुर प्रसाद तत सभ बूझिआ ॥ जब देखउ तब सभ किछ मूल ॥ नानक सो सूखम सोई असथूल ॥५॥ नह किछ जनमै नह किछ मरै ॥ आपन चलित आप ही करै ॥ आवन जावन द्रिसट अनद्रिसट ॥ आज्ञाकारी धारी सभ सृष्ट ॥ आपे आप सगल महि आप ॥ अनिक जुगत रच थाप उथाप ॥ अबिनासी नाही किछ खंड ॥ धारण धार रहयो ब्रह्मंड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आप जपाए त नानक जाप ॥६॥ जिन प्रभ जाता सु सोभावंत ॥ सगल संसार उधरै तिन मंत ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ आपे मेल लए किरपाल ॥ गुर का सबद जप भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो कृपा करहि बडभागै ॥ नाम जपत पावहि बिस्राम

॥ नानक तिन पुरख कौ ऊतम कर मान ॥७॥ जो किछ करै सु प्रभ कै रंग ॥ सदा सदा बसै हर संग ॥ सहज सुभाइ होवै सो होए ॥ करणैहार पछाणै सोए ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिस माहि समाए ॥ ओइ सुख निधान उनहू बन आए ॥ आपस कौ आप दीनो मान ॥ नानक प्रभ जन एको जान ॥८॥१४॥

सलोक ॥ सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरन उधरीऐ नानक तिस बलिहार ॥१॥

अष्टपदी ॥ टूटी गाढनहार गोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की चिंता जिस मन माहि ॥ तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ रे मन मेरे सदा हर जाप ॥ अबिनासी प्रभ आपे आप ॥ आपन कीआ कछू न होए ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोए ॥ तिस बिन नाही तेरै किछ काम ॥ गत नानक जप एक हर नाम ॥१॥ रूपवंत होए नाही मोहै ॥ प्रभ की जोत सगल घट सोहै ॥ धनवंता होए क्या को गरबै ॥ जा सभ किछ तिस का दीया दरबै ॥ अत सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ जे को होए बहै दातार ॥ तिस देनहार जानै गावार ॥ जिस गुर प्रसाद तूटै हौं रोग ॥ नानक सो जन सदा अरोग ॥२॥ ज्यों मंदर कौ थामै थमन ॥ त्यों गुर का सबद

मनहि असथमन ॥ ज्यों पाखाणु नाव चड़ तरै ॥ प्राणी गुर चरण लगत निसतरै ॥ ज्यों अंधकार दीपक परगास ॥ गुर दरसन देख मन होए बिगास ॥ ज्यों महा उद्यान महि मारग पावै ॥ त्यों साधू संग मिल जोत प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ धूर ॥ नानक की हर लोचा पूर ॥३॥ मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥ पुरब लिखे का लिखया पाइए ॥ दूख सूख प्रभ देवनहार ॥ अवर त्याग तू तिसहि चितार ॥ जो कछु करै सोई सुख मान ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कौन बसत आई तेरै संग ॥ लपट रहयो रस लोभी पतंग ॥ राम नाम जप हिरदे माहि ॥ नानक पत सेती घर जाहि ॥४॥ जिस वखर कौ लैन तू आया ॥ राम नाम संतन घर पाया ॥ तज अभिमान लेहु मन मोल ॥ राम नाम हिरदे महि तोल ॥ लाद खेप संतह संग चाल ॥ अवर त्याग बिख्या जंजाल ॥ धंन धंन कहै सभ कोए ॥ मुख ऊजल हर दरगह सोए ॥ एहो वापार विरला वापारै ॥ नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥ चरन साध के धोए धोए पीओ ॥ अरप साध कौ अपना जीओ ॥ साध की धूर करहु इसनान ॥ साध ऊपर जाईऐ कुरबान ॥ साध सेवा वडभागी पाइए ॥ साधसंग हर कीरतन गाईऐ ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ हर गुन गाए अमृत रस चाखै ॥ ओट गही संतह दर आया ॥ सरब सूख नानक तिह पाया ॥६॥ मिरतक कौ जीवालनहार ॥ भूखे कौ देवत अधार ॥ सरब निधान जा की दृष्टि माहि ॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ सभ किछ तिस

का ओहो करनै जोग ॥ तिस बिन दूसर होआ न होग ॥ जप जन सदा सदा दिन रैणी ॥ सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥ कर किरपा जिस कौ नाम दीया ॥ नानक सो जन निरमल थीआ ॥७॥ जा कै मन गुर की परतीत ॥ तिस जन आवै हर प्रभ चीत ॥ भगत भगत सुनीऐ तिहु लोइ ॥ जा कै हिरदै एको होए ॥ सच करणी सच ता की रहत ॥ सच हिरदै सत मुख कहत ॥ साची द्रिसट साचा आकार ॥ सच वरतै साचा पासार ॥ पारब्रह्म जिन सच कर जाता ॥ नानक सो जन सच समाता ॥८॥१५॥

सलोक ॥ रूप न रेख न रंग किछ त्रिहु गुण ते प्रभ भिन्न ॥ तिसहि बुझाए नानका जिस होवै सुप्रसंन ॥१॥

अष्टपदी ॥ अबिनासी प्रभ मन महि राख ॥ मानुख की तू प्रीत त्याग ॥ तिस ते परै नाही किछ कोए ॥ सरब निरंतर एको सोए ॥ आपे बीना आपे दाना ॥ गहिर ग्मभीर गहीर सुजाना ॥ पारब्रह्म परमेसुर गोबिंद ॥ कृपा निधान दयाल बखसंद ॥ साध तेरे की चरनी पाओ ॥ नानक कै मन एहो अनराओ ॥१॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥ जो कर पाया सोई होग ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोर ॥ तिस का मंत्र न जानै होर ॥ अनद रूप मंगल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीअहि घर ता कै ॥ राज महि राज जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसर गृहसत

महि भोगी ॥ ध्याए ध्याए भगतह सुख पाया ॥ नानक तिस पुरख का किनै अंत न पाया ॥२॥ जा की लीला की मित नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनम कि जानै पूत ॥ सगल परोई अपुनै सूत ॥ सुमत ज्ञान ध्यान जिन देए ॥ जन दास नाम ध्यावह सेए ॥ तिहु गुण महि जा कौ भरमाए ॥ जनम मरै फिर आवै जाए ॥ ऊच नीच तिस के असथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥ नाना रूप नाना जा के रंग ॥ नाना भेख करहि इक रंग ॥ नाना बिध कीनो बिसथार ॥ प्रभ अबिनासी एकंकार ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूर रहयो पूरन सभ ठाइ ॥ नाना बिध कर बनत बनाई ॥ अपनी कीमत आपे पाए ॥ सभ घट तिस के सभ तिस के ठाओ ॥ जप जप जीवै नानक हर नांओ ॥४॥ नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम के धारे खंड ब्रह्मंड ॥ नाम के धारे सिमृत बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन ज्ञान ध्यान ॥ नाम के धारे आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै संग उधरे सुन स्रवन ॥ कर किरपा जिस आपनै नाम लाए ॥ नानक चौथे पद महि सो जन गत पाए ॥५॥ रूप सत जा का सत असथान ॥ पुरख सत केवल परधान ॥ करतूत सत सत जा की बाणी ॥ सत पुरख सभ माहि समाणी ॥ सत करम जा की रचना सत ॥ मूल सत सत उतपत ॥ सत करणी निरमल निरमली ॥ जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ सत नाम प्रभ का सुखदाई ॥ बिस्वास सत नानक गुर ते पाए

॥६॥ सत बचन साधू उपदेस ॥ सत ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ सत निरत बूझै जे कोए ॥ नाम जपत ता की गत होए ॥ आप सत कीआ सभ सत ॥ आपे जानै अपनी मित गत ॥ जिस की सृष्ट सु करणैहार ॥ अवर न बूझि करत बीचार ॥ करते की मित न जानै कीआ ॥ नानक जो तिस भावै सो वरतीआ ॥७॥ बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ जिन बूझिआ तिस आया स्वाद ॥ प्रभ कै रंग राच जन रहे ॥ गुर कै बचन पदारथ लहे ॥ ओइ दाते दुख काटनहार ॥ जा कै संग तरै संसार ॥ जन का सेवक सो वडभागी ॥ जन कै संग एक लिव लागी ॥ गुन गोबिद कीरतन जन गावै ॥ गुर प्रसाद नानक फल पावै ॥८॥१६॥

सलोक ॥ आद सच जुगाद सच ॥ है भ सच नानक होसी भ सच ॥१॥

अष्टपदी ॥ चरन सत सत परसनहार ॥ पूजा सत सत सेवदार ॥ दरसन सत सत पेखनहार ॥ नाम सत सत ध्यावनहार ॥ आप सत सत सभ धारी ॥ आपे गुण आपे गुणकारी ॥ सबद सत सत प्रभ बकता ॥ सुरत सत सत जस सुनता ॥ बुझनहार कौ सत सभ होए ॥ नानक सत सत प्रभ सोए ॥१॥ सत सरूप रिदै जिन मानया ॥ करन करावन तिन मूल पछानया ॥ जा कै रिदै बिस्वास प्रभ आया

॥ तत ज्ञान तिस मन प्रगटाया ॥ भै ते निरभौ होए बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिस माहि समाना ॥ बसत माहि ले बसत गडाई ॥ ता कौ भिन्न न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहार बिबेक ॥ नाराइन मिले नानक एक ॥२॥ ठाकुर का सेवक आज्ञाकारी ॥ ठाकुर का सेवक सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मन परतीत ॥ ठाकुर के सेवक की निरमल रीत ॥ ठाकुर कौ सेवक जानै संग ॥ प्रभ का सेवक नाम कै रंग ॥ सेवक कौ प्रभ पालनहारा ॥ सेवक की राखै निरंकारा ॥ सो सेवक जिस दया प्रभ धारै ॥ नानक सो सेवक सास सास समारै ॥३॥ अपुने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवक की सरपर राखै ॥ अपने दास कौ देए वडाई ॥ अपने सेवक कौ नाम जपाई ॥ अपने सेवक की आप पत राखै ॥ ता की गत मित कोए न लाखै ॥ प्रभ के सेवक कौ को न पहूचै ॥ प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो प्रभ अपनी सेवा लाया ॥ नानक सो सेवक दह दिस प्रगटाया ॥४॥ नीकी कीरी महि कल राखै ॥ भसम करै लसकर कोट लाखै ॥ जिस का सास न काढत आप ॥ ता कौ राखत दे कर हाथ ॥ मानस जतन करत बहु भात ॥ तिस के करतब बिरथे जात ॥ मारै न राखै अवर न कोए ॥ सरब जीआ का राखा सोए ॥ काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जप नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥ बारं बार बार प्रभ जपीऐ ॥ पी अमृत एहो मन तन ध्रपीऐ ॥ नाम रतन जिन गुरमुख पाया ॥ तिस किछ अवर नाही द्रिसटाया ॥ नाम धन नामो रूप रंग ॥ नामो

सुख हर नाम का संग ॥ नाम रस जो जन त्रिपताने ॥ मन तन नामहि नाम समाने ॥ ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥ बोलहु जस जिहबा दिन रात ॥ प्रभ अपनै जन कीनी दात ॥ करहि भगत आतम कै चाइ ॥ प्रभ अपने स्यो रहहि समाए ॥ जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ अपने का हुकम पछानै ॥ तिस की महिमा कौन बखानउ ॥ तिस का गुन कहि एक न जानउ ॥ आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥ मन तन अपना तिन जन देहि ॥ जिन जन अपना प्रभू पछाता ॥ सो जन सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरन सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरस सभ पाप मिटावहि ॥ अवर स्यानप सगली छाडु ॥ तिस जन की तू सेवा लाग ॥ आवन जान न होवी तेरा ॥ नानक तिस जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥

सलोक ॥ सत पुरख जिन जानया सतगुर तिस का नांओ ॥
तिस कै संग सिख उधरै नानक हर गुन गाओ ॥१॥

अष्टपदी ॥ सतगुर सिख की करै प्रतिपाल ॥ सेवक कौ गुर सदा दयाल ॥ सिख की गुर दुरमत मल हिरै ॥ गुर बचनी हर नाम उचरै ॥ सतगुर सिख के बंधन काटै ॥ गुर का सिख बिकार ते हाटै ॥ सतगुर सिख कौ नाम धन देए ॥ गुर का सिख वडभागी हे ॥ सतगुर सिख का हलत पलत सवारै ॥ नानक सतगुर सिख कौ जीअ नाल

समारै ॥१॥ गुर कै गृहि सेवक जो रहै ॥ गुर की आज्ञा मन महि सहै ॥ आपस कौ कर कछु न जनावै ॥ हर हर नाम रिदै सद धिआवै ॥ मन बेचै सतगुर कै पास ॥ तिस सेवक के कारज रास ॥ सेवा करत होए निहकामी ॥ तिस कौ होत परापत सुआमी ॥ अपनी कृपा जिस आप करेए ॥ नानक सो सेवक गुर की मत लेए ॥२॥ बीस बिसवे गुर का मन मानै ॥ सो सेवक परमेसुर की गत जानै ॥ सो सतगुर जिस रिदै हर नांओ ॥ अनिक बार गुर कौ बल जाउ ॥ सरब निधान जीअ का दाता ॥ आठ पहर पारब्रह्म रंग राता ॥ ब्रह्म महि जन जन महि पारब्रह्म ॥ एकहि आप नही कछु भरम ॥ सहस स्यानप लया न जाईऐ ॥ नानक ऐसा गुर बडभागी पाइए ॥३॥ सफल दरसन पेखत पुनीत ॥ परसत चरन गत निरमल रीत ॥ भेटत संग राम गुन रवे ॥ पारब्रह्म की दरगह गवे ॥ सुन कर बचन करन आघाने ॥ मन संतोख आतम पतीआने ॥ पूरा गुर अख्यओ जा का मंत्र ॥ अमृत द्रिसट पेखै होए संत ॥ गुण बिअंत कीमत नही पाए ॥ नानक जिस भावै तिस लए मिलाए ॥४॥ जिहबा एक उसतत अनेक ॥ सत पुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ निराहार निरवैर सुखदाई ॥ ता की कीमत किनै न पाए ॥ अनिक भगत बंदन नित करहि ॥ चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ सद बलिहारी सतगुर अपने ॥ नानक जिस प्रसाद ऐसा प्रभ जपने ॥५॥ एहो हर रस पावै जन कोए ॥ अमृत पीवै अमर सो होए ॥ उस पुरख

का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मन प्रगटे गुनतास ॥ आठ पहर हर का नाम लेए ॥ सच उपदेस सेवक कौ देए ॥ मोह माया कै संग न लेप ॥ मन महि राखै हर हर एक ॥ अंधकार दीपक परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥ तपत माहि ठाढ वरताई ॥ अनद भया दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भौ चूका निरभौ होए बसे ॥ सगल ब्याध मन ते खै नसे ॥ जिस का सा तिन किरपा धारी ॥ साधसंग जप नाम मुरारी ॥ थित पाए चूके भ्रम गवन ॥ सुन नानक हर हर जस स्रवन ॥७॥ निरगुन आप सरगुन भी ओही ॥ कला धार जिन सगली मोही ॥ अपने चरित प्रभ आप बनाए ॥ अपुनी कीमत आपे पाए ॥ हर बिन दूजा नाही कोए ॥ सरब निरंतर एको सोए ॥ ओत पोत रविआ रूप रंग ॥ भए प्रगास साध कै संग ॥ रच रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥

सलोक ॥ साथ न चालै बिन भजन बिख्या सगली छार ॥ हर हर नाम कमावना नानक एहो धन सार ॥१॥

अष्टपदी ॥ संत जना मिल करहु बीचार ॥ एक सिमर नाम आधार ॥ अवर उपाव सभ मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उर धारहु ॥ करन कारन सो प्रभ समरथ ॥ द्रिड़ु कर गहहु नाम हर वथ ॥ एहो धन संचहु होवहु भगवंत ॥ संत जना का निरमल मंत ॥ एक आस

राखहु मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिट जाहि ॥१॥ जिस धन कौ चार कुंट उठधावहि ॥ सो धन हर सेवा ते पावहि ॥ जिस सुख कौ नित बाछहि मीत ॥ सो सुख साधू संग परीत ॥ जिस सोभा कौ करहि भली करनी ॥ सा सोभा भज हर की सरनी ॥ अनिक उपावी रोग न जाए ॥ रोग मिटै हर अवखध लाए ॥ सरब निधान महि हर नाम निधान ॥ जप नानक दरगहि परवान ॥२॥ मन परबोधहु हर कै नाए ॥ दह दिस धावत आवै ठाइ ॥ ता कौ बिघन न लागै कोए ॥ जा कै रिदै बसै हर सोए ॥ कल ताती ठांढा हर नांओ ॥ सिमर सिमर सदा सुख पाओ ॥ भौ बिनसै पूरन होए आस ॥ भगत भाए आतम परगास ॥ तित घर जाए बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥ तत बीचार कहै जन साचा ॥ जनम मरै सो काचो काचा ॥ आवा गवन मिटै प्रभ सेव ॥ आप त्याग सरन गुरदेव ॥ इउ रतन जनम का होए उधार ॥ हर हर सिमर प्रान आधार ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिमृत सासत बेद बीचारे ॥ हर की भगत करहु मन लाए ॥ मन बंछत नानक फल पाए ॥४॥ संग न चालस तेरै धना ॥ तूं क्या लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटंब अर बनिता ॥ इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माया बिसथार ॥ इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ अस हसती रथ असवारी ॥ झूठा ड्मफु झूठु पासारी ॥ जिन दीए तिस बुझै न बिगाना ॥ नाम बिसार नानक पछुताना ॥५॥ गुर की मत तूं लेहि याने ॥ भगत बिना बहु डूबे सयाने

॥ हर की भगत करहु मन मीत ॥ निरमल होए तुम्हारो चीत ॥ चरन कमल राखहु मन माहि ॥ जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ आप जपहु अवरा नाम जपावहु ॥ सुनत कहत रहत गत पावहु ॥ सार भूत सत हर को नांओ ॥ सहज सुभाइ नानक गुन गाओ ॥६॥ गुन गावत तेरी उतरस मैल ॥ बिनस जाए हौमै बिख फैल ॥ होहि अचिंत बसै सुख नाल ॥ सास ग्रास हर नाम समाल ॥ छाड स्यानप सगली मना ॥ साधसंग पावहि सच धना ॥ हर पूंजी संच करहु ब्योहार ॥ ईहा सुख दरगह जैकार ॥ सरब निरंतर एको देख ॥ कहु नानक जा कै मस्तक लेख ॥७॥ एको जप एको सालाहि ॥ एक सिमर एको मन आहि ॥ एकस के गुन गाओ अनंत ॥ मन तन जाप एक भगवंत ॥ एको एक एक हर आप ॥ पूरन पूर रहयो प्रभ ब्याप ॥ अनिक बिसथार एक ते भए ॥ एक अराध पराछत गए ॥ मन तन अंतर एक प्रभ राता ॥ गुर प्रसाद नानक इक जाता ॥८॥१९॥

सलोक ॥ फिरत फिरत प्रभ आया परया तौ सरनाए ॥ नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाए ॥१॥

अष्टपदी ॥ जाचक जन जाचै प्रभ दान ॥ कर किरपा देवहु हर नाम ॥ साध जना की मागउ धूर ॥ पारब्रह्म मेरी सरधा पूर ॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावौ ॥ सास सास प्रभ तुमहि ध्यावौ ॥ चरन कमल स्यो

लागै प्रीत ॥ भगत करौ प्रभ की नित नीत ॥ एक ओट एको आधार ॥ नानक मागै नाम प्रभ सार ॥१॥ प्रभ की द्रिसट महा सुख होए ॥ हर रस पावै बिरला कोए ॥ जिन चाख्या से जन त्रिपताने ॥ पूरन पुरख नही डोलाने ॥ सुभर भरे प्रेम रस रंग ॥ उपजै चाउ साध कै संग ॥ परे सरन आन सभ त्याग ॥ अंतर प्रगास अनदिन लिव लाग ॥ बडभागी जपिआ प्रभ सोए ॥ नानक नाम रते सुख होए ॥२॥ सेवक की मनसा पूरी भई ॥ सतगुर ते निरमल मत लई ॥ जन कौ प्रभ होएओ दयाल ॥ सेवक कीनो सदा निहाल ॥ बंधन काट मुकत जन भया ॥ जनम मरन दूख भ्रम गया ॥ इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥ रवि रहया सद संग हजूरी ॥ जिस का सा तिन लीआ मिलाए ॥ नानक भगती नाम समाए ॥३॥ सो क्यों बिसरै ज घाल न भानै ॥ सो क्यों बिसरै ज कीआ जानै ॥ सो क्यों बिसरै जिन सभ किछ दीया ॥ सो क्यों बिसरै ज जीवन जीआ ॥ सो क्यों बिसरै ज अगन महि राखै ॥ गुर प्रसाद को बिरला लाखै ॥ सो क्यों बिसरै ज बिख ते काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ गुर पूरै तत इहै बुझाया ॥ प्रभ अपना नानक जन ध्याया ॥४॥ साजन संत करहु एहो काम ॥ आन त्याग जपहु हर नाम ॥ सिमर सिमर सिमर सुख पावहु ॥ आप जपहु अवरह नाम जपावहु ॥ भगत भाए तरीऐ संसार ॥ बिन भगती तन होसी छार ॥ सरब कल्याण सूख निध नाम ॥ बूडत जात पाए बिस्राम ॥ सगल दूख का होवत नास ॥ नानक नाम जपहु गुनतास

॥५॥ उपजी प्रीत प्रेम रस चाउ ॥ मन तन अंतर इही सुआओ ॥ नेत्रहु पेख दरस सुख होए ॥ मन बिगसै साध चरन धोए ॥ भगत जना कै मन तन रंग ॥ बिरला कोऊ पावै संग ॥ एक बसत दीजै कर मया ॥ गुर प्रसाद नाम जप लया ॥ ता की उपमा कही न जाए ॥ नानक रहया सरब समाए ॥६॥ प्रभ बखसंद दीन दयाल ॥ भगत वछल सदा किरपाल ॥ अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ आद पुरख कारण करतार ॥ भगत जना के प्रान अधार ॥ जो जो जपै सु होए पुनीत ॥ भगत भाए लावै मन हीत ॥ हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ नानक तुमरी सरन पुरख भगवान ॥७॥ सरब बैकुंठ मुकत मोख पाए ॥ एक निमख हर के गुन गाए ॥ अनिक राज भोग बडिआई ॥ हर के नाम की कथा मन भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हर हर नीत ॥ भली सु करनी सोभा धनवंत ॥ हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥ साधसंग प्रभ देहु निवास ॥ सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥

सलोक ॥ सरगुन निरगुन निरंकार सुन्न समाधी आप ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिर जाप ॥१॥

अष्टपदी ॥ जब अकार एहो कछु न द्रिसटेता ॥ पाप पुन्न तब कह ते होता ॥ जब धारी आपन सुन्न समाध ॥ तब बैर बिरोध किस संग

कमात ॥ जब इस का बरन चिहन न जापत ॥ तब हरख सोग कहु किसहि ब्यापत ॥ जब आपन आप आप पारब्रह्म ॥ तब मोह कहा किस होवत भरम ॥ आपन खेल आप वरतीजा ॥ नानक करनैहार न दूजा ॥१॥ जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब बंध मुकत कहु किस कौ गनी ॥ जब एकहि हर अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कौन अउतार ॥ जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥ तब सिव सकत कहहु कित ठाइ ॥ जब आपहि आप अपनी जोत धरै ॥ तब कवन निडर कवन कत डरै ॥ आपन चलित आप करनैहार ॥ नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥ अबिनासी सुख आपन आसन ॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ जब पूरन करता प्रभ सोए ॥ तब जम की त्रास कहहु किस होए ॥ जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ तब चित्र गुपत किस पूछत लेखा ॥ जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥ तब कौन छुटे कौन बंधन बाधे ॥ आपन आप आप ही अचरजा ॥ नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥ जह निरमल पुरख पुरख पत होता ॥ तह बिन मैल कहहु क्या धोता ॥ जह निरंजन निरंकार निरबान ॥ तह कौन कौ मान कौन अभिमान ॥ जह सरूप केवल जगदीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ जह जोत सरूपी जोत संग समावै ॥ तह किसहि भूख कवन त्रिपतावै ॥ करन करावन करनैहार ॥ नानक करते का नाहि सुमार ॥४॥ जब अपनी सोभा आपन संग बनाई ॥ तब कवन माए बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सरब

कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन आप आप उर धारै ॥ तौ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आप नेरा ॥ तह कौन ठाकुर कौन कहीऐ चेरा ॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ नानक अपनी गत जानहु आप ॥५॥ जह अछल अछेद अभेद समाया ॥ ऊहा किसहि ब्यापत माया ॥ आपस कौ आपहि आदेस ॥ तिहु गुण का नाही परवेस ॥ जह एकहि एक एक भगवंता ॥ तह कौन अचिंत किस लागै चिंता ॥ जह आपन आप आप पतीआरा ॥ तह कौन कथै कौन सुननैहारा ॥ बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कौ आपहि पहूचा ॥६॥ जह आप रचिओ परपंच अकार ॥ तिहु गुण महि कीनो बिसथार ॥ पाप पुन्न तह भई कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥ आल जाल माया जंजाल ॥ हौमै मोह भरम भै भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ आपन खेल आप कर देखै ॥ खेल संकोचै तौ नानक एकै ॥७॥ जह अबिगत भगत तह आप ॥ जह पसरै पासार संत परताप ॥ दुहू पाख का आपहि धनी ॥ उन की सोभा उनहू बनी ॥ आपहि कौतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन निरजोग ॥ जिस भावै तिस आपन नाए लावै ॥ जिस भावै तिस खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ ज्यों बुलावहु त्यों नानक दास बोलै ॥८॥२१॥

सलोक ॥ जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ नानक एको पसरया दूजा कह द्रिसटार ॥१॥

अष्टपदी ॥ आप कथै आप सुननैहार ॥ आपहि एक आप बिसथार ॥ जा तिस भावै ता सृष्ट उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए ॥ तुम ते भिन्न नही किछ होए ॥ आपन सूत सभ जगत परोइ ॥ जा कौ प्रभ जीओ आप बुझाए ॥ सच नाम सोई जन पाए ॥ सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल सृष्ट का जेता ॥१॥ जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥ दीन दयाल अनाथ को नाथ ॥ जिस राखै तिस कोए न मारै ॥ सो मूआ जिस मनहु बिसारै ॥ तिस तज अवर कहा को जाए ॥ सभ सिर एक निरंजन राय ॥ जीअ की जुगत जा कै सभ हाथ ॥ अंतर बाहर जानहु साथ ॥ गुन निधान बेअंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥२॥ पूरन पूर रहे दयाल ॥ सभ ऊपर होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आप ॥ अंतरजामी रहयो ब्याप ॥ प्रतिपालै जीअन बहु भात ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि धिआत ॥ जिस भावै तिस लए मिलाए ॥ भगत करहि हर के गुण गाए ॥ मन अंतर बिस्वास कर मानया ॥ करनहार नानक इक जानया ॥३॥ जन लागा हर एकै नाए ॥ तिस की आस न बिरथी जाए ॥ सेवक कौ सेवा बन आई ॥ हुकम बूझि परम पद पाए ॥ इस ते ऊपर नही बीचार ॥ जा कै मन बसिआ निरंकार ॥ बंधन तोर भए निरवैर ॥ अनदिन पूजहि

गुर के पैर ॥ इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥ नानक हर प्रभ आपहि मेले ॥४॥ साधसंग मिल करहु अनंद ॥ गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥ राम नाम तत करहु बीचार ॥ दुर्लभ देह का करहु उधार ॥ अमृत बचन हर के गुन गाओ ॥ प्रान तरन का इहै सुआओ ॥ आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अज्ञान बिनसै अंधेरा ॥ सुन उपदेस हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ हलत पलत दुए लेहु सवार ॥ राम नाम अंतर उर धार ॥ पूरे गुर की पूरी दीख्या ॥ जिस मन बसै तिस साच परीख्या ॥ मन तन नाम जपहु लिव लाए ॥ दूख दरद मन ते भौ जाए ॥ सच वापार करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक बहुर न आवहि जाहि ॥६॥ तिस ते दूर कहा को जाए ॥ उबरै राखनहार ध्याए ॥ निरभौ जपै सगल भौ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिस प्रभ राखै तिस नाही दूख ॥ नाम जपत मन होवत सूख ॥ चिंता जाए मिटै अहंकार ॥ तिस जन कौ कोए न पहुचनहार ॥ सिर ऊपर ठाढा गुर सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥७॥ मत पूरी अमृत जा की द्रिसट ॥ दरसन पेखत उधरत सृष्ट ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसन सुंदर हर रूप ॥ धंन सेवा सेवक परवान ॥ अंतरजामी पुरख प्रधान ॥ जिस मन बसै सु होत निहाल ॥ ता कै निकट न आवत काल ॥ अमर भए अमरा पद पाया ॥ साधसंग नानक हर ध्याया ॥८॥२२॥

सलोक ॥ ज्ञान अंजन गुर दीया अज्ञान अंधेर बिनास ॥ हर किरपा ते संत भेटया नानक मन परगास ॥१॥

अष्टपदी ॥ संतसंग अंतर प्रभ डीठा ॥ नाम प्रभू का लागा मीठा ॥ सगल समिग्री एकस घट माहि ॥ अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥ नौ निध अमृत प्रभ का नाम ॥ देही महि इस का बिस्राम ॥ सुन्न समाध अनहत तह नाद ॥ कहन न जाई अचरज बिसमाद ॥ तिन देख्या जिस आप दिखाए ॥ नानक तिस जन सोझी पाए ॥१॥ सो अंतर सो बाहर अनंत ॥ घट घट ब्याप रहया भगवंत ॥ धरन माहि आकास पयाल ॥ सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बन तिन परबत है पारब्रह्म ॥ जैसी आज्ञा तैसा करम ॥ पौण पाणी बैसंतर माहि ॥ चार कुंट दह दिसे समाहि ॥ तिस ते भिन्न नही को ठाओ ॥ गुर प्रसाद नानक सुख पाओ ॥२॥ बेद पुरान सिमृत महि देख ॥ ससीअर सूर नख्यत्र महि एक ॥ बाणी प्रभ की सभ को बोलै ॥ आप अडोल न कबहू डोलै ॥ सरब कला कर खेलै खेल ॥ मोल न पाइए गुणह अमोल ॥ सरब जोत महि जा की जोत ॥ धार रहयो सुआमी ओत पोत ॥ गुर परसाद भरम का नास ॥ नानक तिन महि एहु बिसास ॥३॥ संत जना का पेखन सभ ब्रह्म ॥ संत जना कै हिरदै सभ धरम ॥ संत जना सुनहि सुभ बचन ॥ सरब ब्यापी राम संग रचन ॥ जिन जाता तिस की इह रहत ॥ सत बचन साधू सभ कहत ॥ जो जो होए

सोई सुख मानै ॥ करन करावनहार प्रभ जानै ॥ अंतर बसे बाहर भी ओही ॥ नानक दरसन देख सभ मोही ॥४॥ आप सत कीआ सभ सत ॥ तिस प्रभ ते सगली उतपत ॥ तिस भावै ता करे बिसथार ॥ तिस भावै ता एकंकार ॥ अनिक कला लखी नह जाए ॥ जिस भावै तिस लए मिलाए ॥ कवन निकट कवन कहीऐ दूर ॥ आपे आप आप भरपूर ॥ अंतरगत जिस आप जनाए ॥ नानक तिस जन आप बुझाए ॥५॥ सरब भूत आप वरतारा ॥ सरब नैन आप पेखनहारा ॥ सगल समग्री जा का तना ॥ आपन जस आप ही सुना ॥ आवन जान इक खेल बनाया ॥ आज्ञाकारी कीनी माया ॥ सभ कै मध अलिप्तो रहै ॥ जो किछ कहणा सु आपे कहै ॥ आज्ञा आवै आज्ञा जाए ॥ नानक जा भावै ता लए समाए ॥६॥ इस ते होए सु नाही बुरा ॥ ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ आप भला करतूत अत नीकी ॥ आपे जानै अपने जी की ॥ आप साच धारी सभ साच ॥ ओत पोत आपन संग राच ॥ ता की गत मित कही न जाए ॥ दूसर होए त सोझी पाए ॥ तिस का कीआ सभ परवान ॥ गुर प्रसाद नानक एहो जान ॥७॥ जो जानै तिस सदा सुख होए ॥ आप मिलाए लए प्रभ सोए ॥ ओहो धनवंत कुलवंत पतिवंत ॥ जीवन मुकत जिस रिदै भगवंत ॥ धंन धंन धंन जन आया ॥ जिस प्रसाद सभ जगत तराया ॥ जन आवन का इहै सुआओ ॥ जन कै संग चित आवै नांओ ॥

आप मुकत मुकत करै संसार ॥ नानक तिस जन कौ सदा नमसकार ॥८॥२३॥

सलोक ॥ पूरा प्रभ आराधिआ पूरा जा का नांओ ॥ नानक पूरा पाया पूरे के गुन गाओ ॥१॥

अष्टपदी ॥ पूरे गुर का सुन उपदेस ॥ पारब्रह्म निकट कर पेख ॥ सास सास सिमरहु गोबिंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आस अनित त्यागहु तरंग ॥ संत जना की धूर मन मंग ॥ आप छोड बेनती करहु ॥ साधसंग अगन सागर तरहु ॥ हर धन के भर लेहु भंडार ॥ नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥ खेम कुसल सहज आनंद ॥ साधसंग भज परमानंद ॥ नरक निवार उधारहु जीओ ॥ गुन गोबिंद अमृत रस पीओ ॥ चित चितवहु नाराइण एक ॥ एक रूप जा के रंग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दीन दयाल ॥ दुख भंजन पूरन किरपाल ॥ सिमर सिमर नाम बारं बार ॥ नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥ उतम सलोक साध के बचन ॥ अमुलीक लाल एहि रतन ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥ आप तरै लोकह निसतार ॥ सफल जीवन सफल ता का संग ॥ जा कै मन लागा हर रंग ॥ जै जै सबद अनाहद वाजै ॥ सुन सुन अनद करे प्रभ गाजै ॥ प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥ नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥ सरन जोग सुन सरनी आए ॥ कर किरपा

प्रभ आप मिलाए ॥ मिट गए बैर भए सभ रेन ॥ अमृत नाम साधसंग लैन ॥ सुप्रसंन भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक की सेव ॥ आल जंजाल बिकार ते रहते ॥ राम नाम सुन रसना कहते ॥ कर प्रसाद दया प्रभ धारी ॥ नानक निबही खेप हमारी ॥४॥ प्रभ की उसतत करहु संत मीत ॥ सावधान एकागर चीत ॥ सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥ जिस मन बसै सु होत निधान ॥ सरब इछा ता की पूरन होए ॥ प्रधान पुरख प्रगट सभ लोइ ॥ सभ ते ऊच पाए असथान ॥ बहुर न होवै आवन जान ॥ हर धन खाट चलै जन सोए ॥ नानक जिसहि परापत होए ॥५॥ खेम सांत रिध नव निध ॥ बुध ज्ञान सरब तह सिध ॥ बिद्या तप जोग प्रभ ध्यान ॥

ज्ञान सरेस्ट (श्रेष्ट) ऊतम इसनान ॥ चार पदारथ कमल प्रगास ॥ सभ कै मध सगल ते उदास ॥ सुंदर चतुर तत का बेता ॥ समदरसी एक द्रिसटेता ॥ इह फल तिस जन कै मुख भने ॥ गुर नानक नाम बचन मन सुने ॥६॥ एहो निधान जपै मन कोए ॥ सभ जुग महि ता की गत होए ॥ गुण गोबिंद नाम धुन बाणी ॥ सिमृत सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मतांत केवल हर नाम ॥ गोबिंद भगत कै मन बिस्राम ॥ कोट अप्राध साधसंग मिटै ॥ संत कृपा ते जम ते छुटै ॥ जा कै मस्तक करम प्रभ पाए ॥ साध सरणि नानक ते आए ॥७॥ जिस मन बसै सुनै लाए प्रीत ॥ तिस जन आवै हर प्रभ चीत ॥ जनम मरन ता का

दूख निवारै ॥ दुलभ देह तत्काल उधारै ॥ निरमल सोभा अमृत ता की बानी ॥ एक नाम मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ता के करम ॥ सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ नानक इह गुण नाम सुखमनी ॥८॥२४॥